आयेगी फरिश्तों की दुनिया...

—ब्र.कु.राजऋषि

ये धरा एक बार सूक्ष्म वतन बन जाएगी, सूक्ष्म वतन ऊपर से नीचे उतर आएगा। इस धरा पर अनेक फरिश्ते दृष्टिगोचर होंगे। यहाँ फरिश्तों व देवताओं का अनूठा संगम होगा। फरिश्ते देवताओं के गले में माला डालेंगे।

ये अनोखे रहस्य कुछ दिव्यबुद्धि-युक्त आत्माओं को ही ज्ञात हैं। वो दिन दूर नहीं, जबकि आकाश में उड़ते हुए फरिश्ते अनेकों को बल प्रदान करेंगे, जबकि उनकी उपस्थिति का आभास मात्र ही अनेकों को निर्भय बनायेगा और सहारा देगा। ऐसे श्रेष्ठ समय का अब भक्तों को इन्तज़ार है जबकि इन फरिश्तों के द्वारा वसुन्धरा पर आध्यात्म और वैराग्य की अनुपम लहर प्रवाहित होगी और भौतिकता में उलझे मनुष्य इन क्षणिक सुखों की क्षणभंगुरता को महसूस करके उनसे मुक्त हो जाएंगे।

यदि बाप से बच्चों का प्यार है तो एक वर्ष में फरिश्ता बनकर दिखाओ, यह आश्चर्यजनक

चुनौति सुनकर समस्त विजय रत्नों की अन्तरग्रन्थियाँ विकसित हो उठी हैं। जो ईश्वरीय प्यार पर कुर्बान हुए वे गहन चिन्तन में रत हैं कि कैसे इस चुनौती का उत्तर दिया जाए। भगवान का चैलेन्ज है। विश्व को चैलेन्ज करने वालों को चैलेन्ज है। कौन ऐसे महावीर व महावीरनियाँ हैं जो इस चुनौती के रहस्य को जानकर फरिश्ते बनने की धुन में बीसों नाखूनों का जोर लगायेंगे। कौन हैं वे, जो इस तरह प्रभु-प्यार का रिटर्न देंगे। हमारे अंग-अंग से प्रकाश की किरणें निकलती दिखाई दें। हमें यह अनुभूति होने लगे कि मैं इस देह में अवतरित फरिश्ता हूँ। हम सूक्ष्म शरीर सहित स्वयं को इस शरीर से अलग अनुभव करने लगें। हमें इससे बाहर जाने का अभ्यास हो जाए- ये बातें परम आवश्यक हैं फरिश्ते स्वरूप के लिए।

सूक्ष्म शरीर क्या है? आत्मा के चारो ओर स्थित प्रभामण्डल के शरीर, इस देह के अन्दर व्याप्त प्रकाशमय शरीर को सूक्ष्म शरीर और चर्म चक्षुओं से दृश्यमान तत्व निर्मित देह को स्थूल काया कहते हैं। शास्त्रों में भी इन शरीरों की चर्चा है। आत्मा जब शरीर में है तो इसे फरिश्ता स्वरूप कहते हैं।

हम निरंतर संकल्प कर रहे हैं। हमारे संकल्प हमारे कर्मों के प्रतिबिम्ब भी हैं। हमारे संकल्पों के वायब्रेशन्स हमारे सम्पूर्ण कर्मों के सूक्ष्म स्वरूप को साथ लिये रहते, आकर्षण से मुक्त हैं। ये संकल्पों की तरंगें निरंतर हमारे सम्पूर्ण शरीर में भी व्याप्त होती रहती हैं और इस प्रकार इस स्थूल देह के अन्दर एक सूक्ष्म काया का निरंतर निर्माण करती रहती है। यह सूक्ष्म शरीर हमारी जीवन शक्ति भी है। यह सूक्ष्म शरीर इस देह में व्याप्त है, न कि आत्मा। आत्मा तो भृकुटि सिंहासन पर विराजमान है।

यदि मनुष्य के संकल्प बुरे हैं, तामसिक हैं तो उससे देह में काले रंग की तरंगें फैलती हैं, फलस्वरूप काला सूक्ष्म शरीर निर्माण होता है, जैसा कि भूत प्रेतों का। यदि मनुष्य के संकल्प राजसी हैं तो कुछ मटमैले रंगों का सूक्ष्म शरीर निर्माण होता है। परन्तु सात्विक मनुष्य की पवित्रता के कारण यह शरीर श्वेत बनता है। इसलिए योगियों की स्थिति ज्यों-ज्यों आनंदकारी होती जाती है उनके चेहरे पर तेज व दिव्यता छाने लगती है और यही प्रकाश पूरे देह में फैलकर अंग-अंग को शीतल कर देता है। इसी तरह हम संकल्प शक्ति के द्वारा शरीर के किसी भाग की व्याधि को भी निर्मल कर सकते हैं।

हम सभी अनेक वर्षों से योग-अभ्यास कर रहे हैं, पवित्रता का बल भी हम सबके पास है। ज्ञान का बल भी निशि-दिन हमारा श्रृंगार कर रहा है। अनेक वरदान भी हमें उपहार स्वरूप प्राप्त हैं। इन सबके द्वारा हमें फरिश्ता बनना है। ब्रह्मा बाबा फरिश्ता कैसे बन गये? हम जानते हैं-अपनी हड्डियाँ यज्ञ सेवा में स्वाहा करके। इससे स्पष्ट है कि फरिश्ता बनने में सेवा का भी उतना ही महत्व है जितना योग व पवित्रता का। क्योंकि रुद्र भगवान ने यह यज्ञ रचा है हमारे देह रूपी अश्व को इसमें स्वाहा कराने के लिए। हम जानते हैं कि यज्ञ सेवा ही हमारे अहं को नष्ट करती है और हमें गुणवान बनाती है।

फरिश्ते के गुण

फरिश्ते वे जो डबल लाईट हों। जिनकी यह सूक्ष्म काया योग अग्नि में गल कर सूक्ष्म हो गई हो। फरिश्ते अर्थात नर-नारी के भान से परे। अर्थात् आत्म अभिमानी स्वरूप में स्थित आत्मा ही फरिश्ता है।

फरिश्ता अर्थात् जिनके अंग-अंग शीतल हों अर्थात् वे पवित्रता की चेतन प्रतिमूर्ति हों। फरिश्ते अर्थात् हद के आकर्षणों से परे, सदा परम आनंद में स्थित, तन के फरिश्ते अर्थात् सब तरफ से किनारा छोड़े हुए, सदा उड़ते पंछी और इस खेल को सदा साक्षी होकर देखने वाले। फरिश्ते अर्थात् सभी प्रभावों से मुक्त, गन्दी दुनिया, तमोप्रधान दृष्टि वृत्ति के प्रभाव से मुक्त। फरिश्ता अर्थात् बुद्धि रूपी पाँव इस दुनिया से ऊपर, संसार की न कोई इच्छा, न कोई आकर्षण। फरिश्ता अर्थात् दिव्य बुद्धि से युक्त, ज्ञान-योग के पंख वाले। निरंतर योग-युक्त अर्थात् मग्न अवस्था में रहने वाले।

बाइबल में बताये गये फरिश्तों के गुण

यहाँ हम पाठकों के लाभार्थ बाइबल में वर्णित फरिश्तों के बारे में कुछ तथ्यों को रख रहे हैं। ताकि यह स्वरूप और अधिक स्पष्ट हो जाए। फरिश्तों का स्वरूप इतना सूक्ष्म होता है कि मनुष्य उसे मुश्किल से ही समझ सकते हैं। उनकी शक्ति, उनका ज्ञान व उनकी गति मनुष्यों की अपेक्षा बहुत अधिक होती है। वे भगवान के कार्य को सफलतापूर्वक पूर्ण करते हैं। वे शक्तिशाली होते हैं, परन्तु वे देवता नहीं होते। एक फरिश्ते में भी अवर्णनीय शक्ति होती है, मानो वे भगवान की भुजाएं होते हैं। वे किसी भी सुसज्जित सेना से अधिक संगठित होते हैं। फरिश्ते बोलते हैं व लोप हो जाते हैं। फरिश्ते किसी का भी ध्यान अपनी ओर नहीं खिचवाते, बल्कि वे सबको ईश्वरीय संदेश देते हैं। हल्कापन तो होता ही है परन्तु साथ-साथ विकर्म होने भी बन्द हो जाते हैं अर्थात् ऐसे योगी की विकर्माजीत स्थिति आ जाती है। क्योंकि विकर्म ही तन, मन को भारी करते हैं। उनका निर्णय अथॉरिटी का होता है। वे बहुत ही सूक्ष्म होते हैं। पृथ्वी पर जो भी होता है, उसका सम्बन्ध फरिश्तों से होता है। वे अदृश्य, अचल, अथक व न रुकने वाले होते हैं। वे आयु सीमा से परे, प्रतिभा सम्पन्न, प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले, पाप-रहित व सदा परम आनन्द में होते हैं। उनमें अलौकिक शक्तियाँ होती हैं, वे उनका प्रयोग विश्व कल्याण के लिए करते हैं।

भगवान फरिश्तों का प्रयोग समय को अनादि में लोप करने के लिए करेगा। वे भगवान को ही प्रत्यक्ष करते हैं स्वयं को नहीं।

सभी फरिश्तों की शक्ति व पवित्रता में भी अन्तर होता है। भगवान के ये दोस्त फरिश्ते हमारी रक्षा के लिए होते हैं।

इन सभी बातों से फरिश्ता स्वरूप और अधिक स्पष्ट हो जाता है। अब हम फरिश्ता बनने के लिए 10 बातों का संक्षिप्त वर्णन कर रहे हैं। आशा है फरिश्ता बनने की लगन वाली आत्माओं को श्रेष्ठ प्रेरणा प्राप्त होगी।

बन्धन मुक्त व विकर्म मुक्त बनकर हमारे पंख अति शक्तिशाली हो जाते हैं। केवल संगमयुग पर ही कोई फरिश्ता बनने के स्वप्न देख सकता है, किसी अन्य युग में नहीं। द्वापर युग के बाद फरिश्तों का केवल गायन होगा, परन्तु कौन थे ये फरिश्ते, किसने इन्हें फरिश्ता बनाया- ये सब प्रश्न अनुत्तरित ही रहेंगे। यहाँ इन सभी प्रश्नों का हल मिल रहा है ईश्वरीय ज्ञान के द्वारा और हम अनेक ब्राह्मण फरिश्ता बनने के मार्ग पर अग्रसर हैं।

मैं प्रकाशमान फरिश्ता हूँ-मैं इस देह से निकलकर फरिश्तों की दुनिया में जा रहा हूँ- सम्पूर्ण फरिश्ता ब्रह्मा मेरे सम्मुख हैं- मैं उनके प्रकाश से प्रकाशित हो रहा हूँ। मैं सम्पूर्ण फरिश्ता बनकर नीचे उतर रहा हूँ- इस देह में प्रविष्ट हो रहा हूँ- मैं इस धरा पर अवतरित फरिश्ता हूँ।

इस प्रकार फरिश्ते स्वरूप द्वारा देह से निकल दूर-दूर जाने का अभ्यास करें। इस स्थिति द्वारा ही हम इष्ट रूप को प्रत्यक्ष करके भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण कर सकेंगे। जबकि हमें भी अनुभव होगा कि हम वहां गये और उन्हें भी अनुभव होगा कि हम वहां आये। इसी से हम एक स्थान पर बैठे दूर के दृश्य देख सकेंगे और वसुधा पर जयजयकार के नगारे बजेंगे कि फरिश्ते धरा पर उतर आये हैं।

हे योगी महान आत्माओं, विश्व तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा है, समय तुम्हारे लिए रुक गया है। विश्व को तुम्हारी महान सेवाओं की आवश्यकता है, तो उठो, अपनी उलझनों को छोड़कर, इच्छाओं को भस्म करके फरिश्ते बनने के लिए सच्चे दिल से कदम बढ़ाओ। याद रहे फरिश्ता तुम्हारा ही स्वरूप है, कल्प-कल्प तुमने ही यह स्वरूप पाया है।

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। जीनियस कौटिल्या को ईश्वरीय सौगात देने के पश्चात दादी हृदयमोहिनी। साथ हैं ब्र.कु.आशा।

बैंगलूरु। शान्तिदूत साइकिल यात्रा की सेवाओं से अवगत कराने के पश्चात ब्र.कु.पदमा मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को ईश्वरीय सौगात देते हुए, साथ में बी.सी.पाटिल एवं अभय जैन।

खजुराहो। रमदा होटल के जनरल मैनेजर सुनंता मैती को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शैलजा। साथ हैं ब्र.कु.विद्या एवं ब्र.कु.पीयूष।

दिल्ली-महरौली। दुर्गा पूजा के आध्यात्मिक मर्म का विवरण करने के पश्चात ब्र.कु.अनुसूया, ब्र.कु.अनीता। साथ हैं दिल्ली विधान सभा अध्यक्ष, महरौली की काउन्सलर पुष्पा सिंह एवं कांग्रेस के ब्लॉक अध्यक्ष।

दीव। कलेक्टर रमेश वर्मा एवं उनकी पत्नी के साथ ज्ञान चर्चा के पश्चात ब्र.कु.गीता।

फरीदाबाद। गोल्ड फील्ड इंस्टीट्यूट की डायरेक्टर डॉ.शशि अधलखा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रीति एवं ब्र.कु.मधु।